P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-VIII April-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

दक्षिण एशिया में छोटे राष्ट्रों के हितों के प्रति भारत का नैतिक उत्तरदायित्व एक अध्ययन

के. एच. वासनिक
सहायक अध्यापक,
राजनीति शास्त्र विभाग,
शासकीय विदभ ज्ञान विज्ञान संस्था, अमरावती, (महाराष्ट्र)

सारांश

सच तो यह है कि भारत यह एशिया का लोकतांत्रिक व्यवस्था का केन्द्र बिन्दू है। चीन के बाद भारत की जनसंख्या भो एशिया के साथ साथ विश्व में सबसे अधिक है। साथ ही दक्षिण एशिया में भो भारत सबसे बडा राष्ट्र कहलाता है। भारत निरंतर शांती एवं बंधुत्व का वाहक रहा है। इसलिए दक्षिण एशिया में सभो राष्ट्रों के प्रति खासकर पाकिस्तान व श्रीलंका के प्रति भारत की नैतिक जिम्मेदारी अधिक बढ जाती है। क्योंकि दक्षिण एशिया के पाकिस्तान एवं श्रोलंका द्वारा ही भारत की आन्तरिक सुरक्षा निरंतर खतरे में रही है। इसलिए पंडित नेहरू से लेकर नरेन्द्र मोदी तक के प्रधानमंत्री की भूमिका महत्त्वपूर्ण मानी जाएगी। वर्तमान समय में चीन की भूमिका भारत के प्रति नकारात्मक दिख रही है। अमेरिका यह श्रीलंका, पाक और भारत से भो दोस्ती चाहता है। यह भारत के लिए ठीक नही है। इस पर भारत के प्रधानमंत्री की सोच बदलनी चाहिए।

मुख्य शब्द : दक्षेस, शांतिसेना, पारस्पारिक सहयोग, आपसी तालुकात, साझा बाजार, क्षेत्रीय सहयोग, तकनीकी सुरक्षा, नैतिक दायित्त्व एक ही चलन रूपया और आपसी मतभद

प्रस्तावना

दक्षिण एशिया की राज्य व्यवस्था एवं क्षेत्रिय अखंडता की प्रकृति एक ऐसी भ्–राजनीतिक आकृति उपस्थित कर देती है। जिसमें भारत की घरेलू राजनीतिक गतिविधी तथा पडोसी राष्ट्रों के जीवन का अभिन्न सम्बन्ध परिलक्षित होता है। यदि भारत पडोसियों के नीजि जीवन को प्रभावित करने में सक्षम है, तो इसी प्रकार भारतोय राजनीति में इनका भो महत्त्व है।[1] भारतोय क्षमता इनकी संरचना को प्रभावित करने में सक्षम है। प्रादेशिक महाशक्ति होने के कारण इन राष्ट्रों से मधुर तालूकात बनाए रखना तथा इनके हितों की रक्षा करना भारत का नैतिक दायित्व है। मै मानकर चलता आया हूँ कि हिन्दू कुश पर्वत से लेकर सुदूर दक्षिण तक फैला यह क्षेत्र धर्मनिरपेक्षता एवं हिन्दी से ओत–प्रोत है।

भारत इन दोनों सभ्यताओं का धनी है और अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर उसकी अनोखी पहचान है।[२] भ्क्षेत्र, जनसंख्या, विज्ञान तकनीकी तथा सैनिक रूप से ताकतवार होने के कारण भारत की नीति एवं कार्यो का प्रभाव सभो क्षेत्रिय देशों पर स्पष्ट रूप से पडता है। भ्स्त्रातजिक एवं भूराजनीतिक रूप से एक दूसरे से जुड होने के कारण सभो के राष्ट्रीय हित परस्पर एक दूसरे पर निभर करते ह।

दक्षिण एशियाई देशों में सहयोग एवं नेतृत्व के निर्माण के लिए एक संगठन के निर्माण की अनिवार्यंता २० वी शताब्दी के उत्तरार्ध में दक्षिण एशियाई क्षेत्रिय सहयोग संगठन के देशां मे महसूस की जा रही थी। अतः ऐसे क्षेत्रिय सहयोग संगठन का निर्माण का सर्वप्रथम प्रयास बांग्लादेश के तत्कालीन राष्ट्रपति जियाउर रहमान ने किया।[३] उन्होने दक्षिण एशियाई क्षेत्रिय सहयोग के लिए एक कार्य योजना की पृष्ठ भ्मी तैयार कर के सभी दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के राष्ट्रध्यक्षों के सामने प्रस्तुत किया। इसप्रकार ७ दिसम्बर, १९८५ को दक्षेस अर्थात दक्षिण एशियाई सहयोग संगठन की स्थापना की गई, जिसके सदस्य राष्ट्र भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, नेपाल, श्रीलंका, मालद्वीप और आठवा राष्ट्र अफगानिस्तान है। ज्ञातव्य है कि, सार्क विश्व के अन्य प्रादेशिक संगठनों मे सबसे अधिक भाग्यशाली है, क्योंकि इसके निर्माण में किसी महाशक्ति की भ्मिका नही है। दक्षेस का उदय उक्त आठ देशों की आर्थिक जरुरतो और महत्त्वाकाक्षाओं के कारण हुआ जो वास्तव में राजनीतिक मतभदों से भो कही अधिक महत्त्वपूर्ण है। जिसका मुख्य कार्यालय काठमांडू में स्थापित किया गया है।[४]

हॉलांकि सार्क में आज ऐसी अनेक कमियाँ जो उसके सैधांतिक, सहयोग, सार्वभोम सहयोग, संघीय एकात्मता, राजनीतिक स्वतंत्रता, पारस्पारिकता

एवं अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में दखल न देने से उसको कोसों दूर ले जाती है। फलत दक्षिण एशिया में यह सगठन, न तो पूर्णत सफल रहा और न ही पूर्णत विफल। मेरा मानना है कि, दक्षेस अथवा सार्क संगठन आपसी मनमूटाव के कारण अधिक विफल ही रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सार्क परमाणू अप्रसार हाथियारों की होड समाप्त करने, उपनिवेशवाद, हस्तक्षेप, रंगभद एवं आंतकवाद को समाप्त करने के सम्बन्ध में सर्वसम्मत घोषणाएं करता है। किन्तु सदस्य राष्ट्र अपने राष्ट्रीय स्तर पर भिन्न नीति अपनाते हुए दिखाई पडते है। अतः क्षेत्र की सुरक्षा और राजनीतिक एकता के लिए तो प्रशंसा का पात्र है कि वह दो विरोधी राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्षों को वर्ष में एक बार अवश्य मिलने का अवसर प्रदान करता है। सार्क ने दक्षेस राष्ट्रो में सामाजिक सुधार पर विशेष बल दिया है। सार्क ने मादक द्रव्यों की तश्करी को रोकने के लिए हर सम्भव प्रयास किए है। सार्क ऑदियो विजुअल एक्सचेंज की स्थापना के द्वारा सार्क देशों को एक दूसरे से जोडने का प्रयास किया गया। महिला विकास को बढावा देने के लिए सार्क ने वर्ष १९९० को 'बालिका वर्ष' घोषित किया था तथा साथ ही पाँचवे शिखर सम्मेलन में वर्ष १९९१ को दक्षेस आवास वर्ष, ११९३ को विकलांग वर्ष घोषित किया गया था।[५]

हम देखते आ रहे है कि दक्षेस दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के सम्पूर्ण विकास हेतू प्रयासरत रहा है। इधर बांग्लादेश सम्बन्धी तीन बीघा जमीन का विवाद श्रीलंका से शान्ति सेना की वापसी और भारत नेपाल के मध्य व्यापार पारगमन सन्धि सम्बन्धी विवाद की समाप्ति हो जाने से दक्षेस का राजनीतिक वातावरण काफी सौहार्दमय हो उठा। यद्यपि कश्मीर, यह भारत–पाक कटूता का विषय बना हुआ है। सार्क की एकता और अखंडता का फल है कि श्रीलंका की अखंडता की रक्षा भारत ने की है।[६]

इसी प्रकार मालद्वीप के सैनिकों से भारत ने मुक्ति दिलाई और उसकी स्वतंत्रता बनाए रखी। इस आधार पर हम निष्कर्ष निकाल सकते है कि क्षेत्रिय सुरक्षा के मॉडल के रूप मे दक्षेस की भ्मिका उल्लेखनीय रही है। इसलिए दक्षेस को और मजबूत बनाने हेतू नरेन्द्र मोदी सरकार का कदम सराहणीय माना जाएगा जो सत्ता में आते ही उन्होने तिब्बत भ्टान एवं श्रीलंका के साथ दोस्ती का हाथ बढाया है। साथ ही इस बात की घोषणा की है कि क्षेत्रिय बाजार की स्थापना की जाएँ, ओर परमाणू शक्ति के दुरुपयोग को समाप्त किया जाए।[७]

दक्षेस की वास्तविकता का आधार जिस तरह बनाया गया उसकी कई तरह की परिभाषाएँ की जा सकती है। लेकिन इसको कार्यान्वित करने का सारा दारोमदार राजनीतिक और भोगोलिक आधार पर ही निर्धारित होते है। जब कि इस महत्त्वपूर्ण तथ्य को द्विपक्षीय मसला मानकर दक्षेस के क्षेत्र के बाहर कर दिया गया। सबसे बडो समस्या इस क्षेत्र के देशों की सामरिक और राजनीतिक चिन्तन में अन्तर की है। यूरोपीय साझा व्यापार के सभी देश नाटों (NATO) गुट के है। फ्रान्स यद्यपि खुले आम अपने को इस गुट स अलग मानता है। दूसरी ओर 'सार्क' में शामिल देशों में इस आधार पर बिखराव है कि भारत खुले रूप से रूस का दोस्त माना जाता है तथा पाकिस्तान, अमेरिका, श्रीलंका एवं बांग्लादेश अमेरिका की ओर झुके हुए है। उनके सामरिक और राजनीतिक आधार पर पूरी तरह से अलग है। भारत को वे सन्देह की दृष्टि से देखते है ऐसी स्थिती में यह उम्मीद करना कि सार्क के घोषणापत्र को पूरी तरह से लागू किया जाएगा। बहुत कुछ अत्युक्ति सा लगता है जिसे गम्भोरता से लिया जाना चाहिए।[8]

मेरा मानना है कि, दक्षेस विश्व राजनीति मे क्षेत्रीय सहयोग संगठन की नई पहल है क्या यह युरोपीय साझा बाजार की भाँति समेकित संगठन बन सकेगा, यह देखना बाकी है। दक्षेस तभो सफल हो सकता है जब इसके सदस्य एक दूसरे में न केवल विश्वास करेंगे। बल्कि राष्ट्र से ऊपर उठकर संगठन के उद्देश्य को ध्यान में रखकर कार्य करने होंगे।[9]

अपेक्षा यही की जानी चाहिए कि दक्षेस के सभी आठों सदस्य अपने राजनीतिक अहंकार को छोडकर आर्थिक सहयोग का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए तेजी से कदम उठाएँगे और किसी राजनीति शाखा को 'सार्क' के आडे नही आने देंगे। इसके बावजूद यह निश्चित रुप से नही कहाँ जा सकता कि 'दक्षेस' क्या रूप लेगा फिर भो यह अनुमान तो किया जा सकता है कि यदि उसने युरोपीय साझा मंडो के देशों से प्रेरणा ली तो भारतोय उपमहाद्वीप के राष्ट्रों का यह संगठन सहयोग और समाज उसी तरह स्थापित कर सकता है जिस तरह आज युरोप में फ्रान्स और जर्मनी जैसे कर्मठ शत्रु माने जाने वाले राष्ट्रों के बीच है, लेकिन इसके फिलहाल कोई आसार नही दिखाई देते है।[10]

क्षेत्रिय देशों में आपसी समबन्धों के संचालन में गुट निरपेक्षता के अनुकरण में कोई विवाद नही है, यह प्रमाणित हो चुका है कि परस्पर सम्बधों ने इन्हे सुदृढता प्रदान की है। वर्तमान समय मे नई विश्व व्यवस्था के अंतर्गत अमेरिका एवं अन्य पश्चिम शक्तियाँ अपने हितों के अनुकूल अन्तक्षेत्रिय का ला उठाना चाहती है। अन्य तत्त्वों की अपेक्षा क्षेत्रिय अखंडता को बनाए रखने हेतू अन्त क्षेत्रिय प्रतिक्रियाओं का उचित प्रबन्ध विचारणीय है।

भारत श्रीलंका सम्बन्ध के बदलते परिवेश अथवा संदभ

वर्तमान समय में भारत श्रीलंका सम्बन्ध में जो बदलाव आया है उसका असर दक्षेस के लिए महत्वपूर्ण माना जाएगा। नरेन्द्र मोदी सरकार ने दक्षिण एशिया के सभी राष्ट्रों के प्रमुख नेताओं को सरकार गठन के समय बुलाकर नये समीकरणों का परिचय तो दिया है। किन्तू पाकिस्तान का आचरण न तो की बदला है और नही की बदलेगा। दक्षिण एशिया में अमन एवं शांती स्थापित करने में सबसे बढो रुकावट पाकिस्तान ही है। उसके बाद श्रीलंका भो शांति स्थापित होने में आडे आता जाता रहता है। इस संदभ में शांन्ति सेना की वापसी भो भारत श्रीलंका के सम्बंधो में कोई रचनात्मक परिवर्तन न ला सकी। क्योंकि राष्ट्रपति रणसिंघे प्रेमदासा आरम्भ से ही भारत विरोधी थे। शान्ति सेना के बलिदानी कार्यो को अवहेलना की दृष्टि से देखते थे। किन्तू लिट्टे से दोस्ती का उनका दिवास्वप्न सफल न हो सका। इसके लिए भो वे भारत को ही दोषी मानते रहे। श्रीलंका सरकार ने तामिल अल्पसंख्यांको के साथ सदैव पक्षपात पूर्ण बर्ताव

किया तथा अधिकारों की माँग उठाने पर तामिलों का बर्बरता पूर्वक दमन किया। उग्रवादियों ने सिंहलियो पर निरंतर हमले किए। सिंहलियों ने भो चुनकर तामिलों का सफाया शुरु कर दिया।[११]

श्रीलंका में हुए जातीय संघर्ष् का खामियाजा पडोसी देश भारत को भगतना पडा। बहुसंख्यांक सिंहलियों के हमलो व सरकारी दमन से बचने के लिए लग ग १८ लाख शरणार्थी भारत आए। जातीय संघर्ष समाप्त होना नितांत अनिवार्य है। यदि विषय में संघर्ष तेज होता है तो सन १९८५ की भाँति अस्थिभारता के हालात पैदा हो सकते है। श्रीलका में शान्ति, भारत एवं श्रीलंका दोनो के हित में है। भारत और श्रीलंका के मध्य कुछ महत्त्वपूर्ण बाते है वह यह की शान्ति सेना के वापस आने के बाद श्रीलंका को उत्तर पूर्वी राज्यों के तामिलों की सुरक्षा का क्या होगा। लेकिन श्रीलंका की कुछ बेमतलब मानी जाने वाली शक कि निगाहां पर भारत का रुख काफी साफ नजर आता है। मसलन भारत इस बात पर राजी नही है कि, श्रीलंका के तामिलों को भारत के तामिलनाडू राज्य की ध्मारतो पर अपनी गतिविधीयाँ चलाने की इजाजत नही मिलनी चाहिए। भोगोलिक सांस्कृतिक और जातीय रूप से श्रीलंका और भारत के तामिलों के बीच गहरे और भावनात्मक सम्बन्ध है। इसलिए स्वाभाविक तौर पर भारत श्रीलंका से यह करार कर के अपने देश के एक महत्वपूर्ण प्रदेश की भावनाओ का अनादर नही करना चाहेगा।[१२]

श्रीलंका विश्व के अन्य बड राष्ट्रों के साथ सहयोग के अपने द्वारा बन्द नही करना चाहता। फिर भो एक प्रूसत्ता सम्पन्न राष्ट्र होने के नाते उसे पूरा अधिकार है, तथापि अपने आन्तरिक संकट के समय भारत का प्रयोग करके उसे अंगुठा दिखाने की चाल उचित नही कही जा सकती। नैतिक एंव राजनीतिक मानदंड पर भो यह कार्रवाई खरी नही उतरती। श्रीलंका का भारतोय सुरक्षा के लिए असाधारण महत्त्व है। वहाँ की पूरी आबादी प्रायः भारतोय मूल की है। तमिलो का तो भारत से आज भो अटुट सम्बन्ध है। इसीलिए भारत अपने राजनीतिक एवं सुरक्षा सम्बन्धी हितों के साथ–साथ तमिलों के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा करना चाहता है।[१३]

जिसके लिए श्रीलंका का सहयोग नितान्त अनिवार्य है। सबसे अधिक अदम्य एवं उत्साही होने के कारण लिट्टे के साथ श्रीलंका सरकार लगातार संघर्ष में उलझी हुई है। इसी खूनी राजनीति के शिकार पूर्व रक्षामन्त्री रंजन विजय रत्ने, (मार्च १९९१) पूर्व भारतोय प्रधानमंत्री श्री राजवी गांधी (मई १९९१), नौ सेना प्रमुख प्लोरेस फर्नाडो, अतुलन मुदाली (अप्रैल १९९३), अनेक सैनिक अधिकारीयों के साथ–साथ मई दिवस को १ मई, १९९३ को श्रीलंका के तत्कालीन राष्ट्रपति रणसिंघे प्रेमदासा भो मारे गये। जिससे श्रीलंका को राजनैतिक ही नही, आर्थिक झटके भो लगे है।

श्रीलंका में सन २००४ तक नए औद्योगिक देश का दर्जा पाने का सपना देखा जा रहा था। परन्तु हफ्ते भर में ही दो बड नेताओं की हत्या से अब पुंजी निवेश करने वालों मे खौफ पैदा हुआ है इससे श्रीलंका की राजनीतिक, बडे भवर में फँसी लगती है। यदि इससे उभरना है, तो भारत के साथ निरंतर अच्छे रिश्ते रखना होगा। इतना ही नही दक्षिण एशिया में जितने भो छोटे राष्ट्र आते है, खास कर श्रीलंका को भारतोय, चलन यानी रुपया को स्विकारना होगा। यदि ऐसा होता है, तो तमाम दक्षिण एशिया में सबसे बडा भारत होने के कारण सभी दक्षिण एशिया के दक्षेस राष्ट्रों द्वारा यदि भारत का चलन स्विकृत किया जाता है तो विश्वराजनीति में न केवल दक्षिण एशिया का महत्त्व बढेगा बल्कि भारत भो विश्वराजनीति में अमेरिकी, चीन, फ्रान्स, ब्राझिल की तरह अपनी महत्वपूर्ण भ्मिका निभाएगा। इसकी महत्ता बढाने के लिए अनिवार्य है की, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी ने इसके लिए अधिक प्रयासरत रहना चाहिये। तभो दक्षिण एशिया में भारत अपना नैतिक दायित्व निभा पाएगा।

निष्कर्ष

1. भारत दक्षिण एशिया सबसे बढा राज्य है।
2. दक्षिण एशिया के सभी राष्ट्र मे एकता, सहयोग पारस्पारिक विश्वास, आर्थिक स्थिभारता महत्त्वपूर्ण है।
3. खासकर श्रीलंका और भारत में रिश्ते सुधारणा अनिवार्य है।
4. शाति सेना को लेकर दोनों राष्ट्रों मे एतबर हो।
5. दक्षिण एशिया में चलन के रूप एकही चलन हो जिससे विश्व राजनीति में महत्त्व बढेगा और वह चलन ही भारत का रुपया हो।
6. मेरे विचार से भारत एवं श्रीलंका के जातीय समस्या के समाधान के लिए तमिलों को श्रीलंका मे सम्मान के साथ जिने का अधिकार मिलना ही चाहिए।

संदभ

1. चक्रवर्ती निखिल – पीस प्रासपेन्टस इन श्रीलंका द. संडे ऑब्जरवर १७ अप्रैल १९८८ पृ. ५.
2. जयन्त वी द वैटिल फार जाफना, फ्रेटलाईन ३१ अबरबर १३ नवम्बर १९८७, पृ. १३–१५.
3. द हिन्दू न्युज पेपर– २८ दिसम्बर २०१४ , पृ. १७–१८.
4. एल जे सिंह, राष्ट्रीय रक्षा एवं सरक्षा १९९० पृ. ६४५.
5. प्रगति मंजूषा, जनवरी १९८७ पृ. २५.
6. पी. डी. शर्मा– अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति १९९२ पृ.३३४.
7. द सार्क सेक्रेट्रियेट, पब्लिकेशन काठमांडू अप्रैल १९९२.
8. उमाकान्त लखेडा सद्भाव और रोसे का नया सिलसिला नव भारत टाइम्स २० जनवरी १९९० पृ.४.
9. श्रीलंका में अस्थिभारता का नया दौर, इंडिया टुडे १५ मई १९९९ पृ. ३८.
10. पाण्डेस धीरेन्द्रकुमार– श्रीलंका के जातिय संघर्ष के समाधान में भारत की ूमिका अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्युटर्स नई दिल्ली २००७ पृ. १२२.